साधारण औरत के असाधारण काम!

❑ तिलिया

बिहार में 22 वर्ष के बाद 2001 में हुए ग्राम पंचायत चुनाव में तिलिया देवी खड़ी हुई और प्रखंड समिति (पंचायत समिति) के लिए चुन ली गयी। सामान्य सीट पर एक दलित मुसहर महिला का खड़ा होना और जीतना कोई सामान्य घटना नहीं है। भारतीय समाज में जाति एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। जन्म लेते ही व्यक्ति की नियति तय हो जाती है। दलित समाज में जन्म लेने का अर्थ है—मानवीय सम्मान से वंचित हो जाना। दलित महिला तो बाहरी सम्मान के साथ-साथ, घर के अन्दर भी सम्मान से वंचित रहती है। इन विपरीत परिस्थितियों में

जीने वाली एक महिला, यदि पंचायत समिति के मेम्बर के निर्वाचन में मुखिया सहित पंचायत समिति के सभी उम्मीदवारों से भी अधिक मत प्राप्त कर सीट हासिल कर ले तो निश्चित तौर पर यह एक असाधारण घटना है। यह असाधारण काम करने वाली महिला तिलिया बहुत ही सहज व साधारण है।

...जाना कि अछूत हूँ

लगभग 40-45 वर्ष की तिलिया ने मिट्टी और फूस के घर में जन्म लिया था। माँ-बाप मालिक के खेत में मज़दूरी करते थे। रात-बिरात माता-पिता दोनों को बेगारी के लिए मालिक की दहलीज़ पर जाना पड़ता था। मधुबनी ज़िले के झंझारपुर अनुमण्डल से 10 कि.मी. दक्षिण के लक्ष्मीपुर कैथनिया गाँव में जन्मी तिलिया तीन भाई एवं तीन बहनें हैं।

तिलिया जब थोड़ी बड़ी हुई तो उसने जाना कि वह अछूत है। यह कैसी विडम्बना है कि भारतीय समाज में जहाँ कुत्ते-बिल्ली, गाय-भैंस को छूने से कुछ नहीं होता, वहाँ आदमी को छूने से आदमी अपवित्र हो जाता है। दलित स्त्री का मतलब है उपभोग की वस्तु। इन्हें इस्तेमाल करो और दूर गाँव के एक कोने में फेंक दो। तिलिया कहती है जब वह छोटे-छोटे बच्चों को गाँव के पास स्कूल जाते देखती, तो बाबा से कहती मुझे भी स्कूल जाना है। बाबा कहते स्कूल की तरफ़ देखना पाप है। हमारे भाग्य में दूसरे के यहाँ मज़दूरी करना ही लिखा है। डेढ़ किलो धान, गेहूँ या मड़ुआ से परिवार का ख़र्च नहीं चलता था। इसलिए जैसे-जैसे भाई-बहन बड़े हुए बाबा के साथ मालिक के यहाँ मज़दूरी के काम में लग गए। छः भाई बहनों में पाँचवीं तिलिया जब 15 वर्ष की हुई तो खेत में मज़दूरी करना शुरू कर दी।

बचपन में ही तिलिया की शादी खैरी गाँव में हो गई। ससुराल आते ही खेत-मज़दूरी के काम में लग गयी। एक साल बाद पहला लड़का हुआ। एक के बाद एक छः सालों में छह बच्चे हो गए। जब काम नहीं मिलता तो साग-सब्ज़ी लेकर गाँवों में बेचने चली जाती थी। बच्चों को दूध मिले, इसके लिए एक बकरी रख ली। तिलिया के मन में इन स्थितियों से बाहर निकलने की चाहत तो थी पर निकले कैसे, नहीं जानती थी। इस बारे में अपने गाँव की औरतों से बातें भी करती कि क्या करें? 1986-87 में जब दो-तीन लोग गाँव में आए और महिला

संगठन बनाने की बात कहने लगे तो गाँव की औरतों ने तिलिया को उनसे मिलवा दिया। गाँव में आए लोगों ने जब ग़रीबी, शोषण, अत्याचार के ख़िलाफ़ संघर्ष करने का सपना दिखाया, तो तिलिया संगठन का काम करने को तैयार हो गई।

संघर्ष तेज होता गया

गाँव में जब महिला संगठन बनाने का काम शुरू हुआ, तो तिलिया फूली नहीं समायी। संगठन के लिए, ग्राम कोष के लिए चंदा इकट्ठा करना शुरू किया। तिलिया कहती है, जैसे-जैसे हम महिलाएँ संगठित होने लगीं, हमारे पुरुषों ने ही हमारा विरोध करना शुरू कर दिया। घर-घर में औरत की पिटाई होने लगी। उनके पति ही उन्हें पीटते। वे औरतों को घर से बाहर संगठन के काम के लिए जाने से रोकने लगे, डराने लगे। औरतों को कुल्टा कहा जाने लगा। लेकिन औरतों ने तिलिया का साथ नहीं छोड़ा, बैठक, विचार-विमर्श करती रही। एक दिन वही हुआ जो कि अमूमन महिलाओं के साथ होता है। तिलिया के पति नेयल सदाय ने तिलिया को इतना पीटा, कि वह एक महीने तक बिछावन नहीं छोड़ पायी। गाँव में जिस-जिस औरत ने पति की बात नहीं मानी उसकी उनके मर्दों ने पिटाई की।

माँ बनने के साथ-साथ हर क्षेत्र में तिलिया ने अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाया था। लेकिन पता नहीं तिलिया के साथ-साथ सभी औरतों को किस बात की सज़ा मिली? यह सज़ा थी अपने मर्दों की बात नहीं मानने की। यह सज़ा थी मर्दों की सत्ता को अस्वीकारने की। अपने पति द्वारा पिटाई के बाद तिलिया ने संकल्प लिया कि वह अपने संघर्ष को और तेज करेगी। उसने तय किया कि वह अपने काम से मर्दों को रास्ते पर आने के लिए मजबूर भी करेगी। तिलिया समझ रही थी कि उनके शंकालु पुरुषों को गाँव के बड़े लोग बहका रहे हैं। औरतों को रोकने और यातना देने के लिए भी वही प्रेरित कर रहे हैं। उसने मन ही मन तय किया कि किसी भी ग़लत पारिवारिक या समाजिक दबाव को नहीं मानेगी।

अब तक वह बहुत कुछ सह चुकी थी। विवाह के बाद ससुराल आते ही, दूसरे दिन से खेत में काम करने जाना पड़ा था। एक बच्चे की माँ बनने के बाद दूसरे बच्चे के लिए मना किया, पर दूसरे साल भी गर्भ ठहर गया। भारी काम करने के कारण दूसरा बच्चा गर्भ में ही मर गया। जब भी परिवार नियोजन की बात कहती, पति डंडा लेकर तैयार हो जाता। कहता

जब हम कमा कर दे ही रहे हैं, तब तुम्हें बच्चा जनने में क्या परेशानी है? हालाँकि तिलिया जानती थी, कि केवल मर्द के कमाने से परिवार नहीं चलता। वह भी कमाती थी, पर उसकी कमाई तो कोई गिनता ही नहीं था। तिलिया के गर्भ में सातवाँ बच्चा भी आ जाता, यदि उसने चुप-चाप बंध्याकरण का ऑपरेशन नहीं करा लिया होता। अपने पति एवं ससुर का विरोध देखकर तिलिया ने महसूस किया कि अब उसे अधिक पैसे कमाने होंगे। ताकि बाल-बच्चों के साथ-साथ संगठन का काम भी ढंग से कर सके। तिलिया ने झंझारपुर स्थित 'सामाजिक शैक्षणिक विकास केन्द्र' में बच्चों को प्रसव कराने वाली पारम्परिक दाई के काम का प्रशिक्षण लिया। इसके लिए उसने परिवार की इच्छा के विरुद्ध 12 दिनों का आमगाछी (पं. बंगाल), 11 दिनों का अंधराठाढी (मधुबनी) तथा 10 दिनों का प्रशिक्षण पटना में लिया। इस प्रशिक्षण में दाई की ट्रेनिंग के अलावा राज-काज एवं समाज की बुराइयों को समझा। शिविर में समस्याओं से निजात पाने का रास्ता भी बताया गया। तिलिया को इतना तो समझ में आ ही गया कि उसे महिलाओं का सशक्त संगठन बनाना है।

सोय, बेटा लेब कि संगठन

इस प्रशिक्षण के बाद तिलिया ने अपनी जीवन शैली बदल ली। वह दूसरे गाँवों में रात में भी जाने लगी। दिन में औरतों के काम में फँसी रहती थी, इसीलिए बैठक नहीं हो पाती थी। रात में औरतें मर्दों की तरह शराब पीकर बहकती नहीं थीं, बल्कि शांति से बैठकर दिन-भर के काम की समीक्षा करती और भविष्य के कार्यों की योजना बनाती। सबसे पहले सूदखोर ब्राह्मणों एवं बनियों से मुक्ति के लिए ग्राम कोष बनाना शुरू किया। ज़रूरत पड़ने पर ग्राम कोष बिना सूद के दलितों को छोटे-मोटे क़र्ज़ देता था। ग्राम कोष का संचालन गाँव की ही दो दलित महिलाएँ करतीं हैं। दो नाम गाँव की महिला बैठक में सर्वसम्मति से तय हुए थे। सूदख़ोरी के विरुद्ध ग्राम कोष ने एक कारगर हथियार का काम किया। जैसे-जैसे सूदखोरी का धंधा चौपट होने लगा, बनिया एवं ब्राह्मणों ने महिला संगठन पर हमला तेज़ कर दिया। संगठन बनने से दलित महिलाओं को बँधुआगिरी से मुक्ति मिलने लगी। संघर्ष तेज होने लगा। ग़ैरमज़रुआ ज़मीन और तालाब, मज़दूरी के संघर्ष में तेजी आने लगी।

पर जैसे-जैसे संघर्ष तेज़ हुआ, वैसे-वैसे उसके कदम रोकने की तैयारी

भी तेज़ी से होने लगी। दलितों के बढ़ते क़दम को रोकने के लिए यह ज़रूरी था कि पहले इनकी नेता 'तिलिया' के पैरों में बेड़ी लगाई जाए। किसी भी महिला पर वेश्या होने का आरोप लगाकर उसे निष्क्रिय करना बहुत आसान होता है। यही हुआ। पति, ससुर, देवर घर में घुसते ही पूछने लगे, कहाँ रहती हो? क्या खाती हो? किस-किस से संबंध रखती हो? तिलिया हँसकर कहती है, "आज आप मेरे साथ घूमें, स्वयं देखें, बातें समझ में आ जाएँगी।" रिश्तेदारों को अनुत्तरित छोड़कर तिलिया दूसरे गाँव में मीटिंग के लिए निकल जाती। इधर तिलिया को नहीं रुकते देख गाँव के बड़े लोग बौखलाने लगे। उसके घर के मर्दों को भड़काने लगे। तिलिया के मर्द से पूछते कैसे मर्द हो, अपनी औरत को कब्ज़े में नहीं रख सकते? तुम लोगों को अपनी इज़्ज़त का थोड़ा भी ख़याल है या नहीं। एक दिन तिलिया मैदान में फ़सल अगोर (रक्षा) रही थी। उसके तीन देवर लाठी लेकर चौर (मैदान) में पहुँचे और कहने लगे "अहाँ पर पंचायती हो रहल छै, अहाँ चलूँ (आप पर पंचायत हो रही है गाँव चलें।) सांझ के 7 बजे तिलिया जातीय पंचायत में पहुँची। तिलिया का पति नेयल सदाय मोटी लाठी लेकर बैठा था। पंचायत में तिलिया से सीधा प्रश्न पूछा गया। "अहाँ सोय (पति), बेटा लेक रहब कि संगठन के साथ, दोनों में एक चुन लिऔ।" (आप पति, बेटा को लेकर रहेंगी या संगठन के साथ, तय कर लो।) गाँव के सभी मर्दों ने अंतिम प्रहार तिलिया पर किया था। तिलिया ने कभी पति और बेटे से अलग रहने की कल्पना भी नहीं की थी। उसने जिन बच्चों को पाला-पोसा, बड़ा किया, उनसे अलग कैसे रह सकती है? तिलिया थोड़ी देर अंतर्द्वंद्व में फँसी रही। वह जानती थी कि यदि वह 'घर और बाहर' दोनों माँगेगी तो उसे नहीं मिलेगा। उसे एक ही चुनना होगा। तिलिया को चुप देखकर पंचायत ने पुनः पूछा, "बताओ, किसके साथ रहोगी?" तिलिया के मुँह से आवाज़ निकली, "संगठन के साथ।"

...संगठन

तिलिया के होंठों से यह बात निकलते ही पंचायत में स्तब्धता छा गयी। पंचायत उठ गई। तिलिया कहती रही मेरी बात सुनिए। यह कैसी पंचायत है जहाँ आरोपी की बात तो सुनी गयी पर वादी को सफ़ाई का अवसर नहीं दिया गया। लेकिन पुरुषों की यह पंचायत कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थी।

तिलिया अपने बच्चों से मिलने जब घर पहुँची तो उसे घर की देहरी भी लाँघने नहीं दी गयी। बच्चे तिलिया की गोद में आने के लिए रो रहे थे। तिलिया की छाती फटने लगी पर उसके और बच्चों के बीच में मोटे-मोटे डंडे के साथ पति एवं देवर खड़े रहे। निष्ठुर पुरुषों ने तिलिया को गाँव से बाहर कर दिया। गाँव से बाहर कमला बाँध के पास स्कूल में रात भर बैठी रही। सुबह परसाड़ गाँव में मृगियां देवी के यहाँ चली गयी। नैहर नहीं गई। वह संगठन के गाँवों में घूमने लगी, महिलाओं को संगठित करने लगी।

इस घटना के बाद तिलिया के विद्रोही और त्यागमयी चरित्र ने महिलाओं को काफी आकर्षित किया। महिलाएँ तेज़ी से संगठित होने लगी। विदेशर, मधुपुर, फैटकी, खैरी, गोदाम, वीरपुर आदि गाँवों में घूम-घूम कर उसने मज़बूत संगठन बना लिया। ऐसे समय में मुनिया ने उसका बहुत साथ दिया। दिनभर गाँव-गाँव घूमती तथा रात में मुनिया के यहाँ लौट आती। 10 दिनों बाद उसने नैहर जाने का फ़ैसला किया। तिलिया पहले बलभद्रपुर स्थित सामाजिक शैक्षणिक विकास केन्द्र पर पहुँची। गाँव में हुई पंचायत की घटना के संदर्भ में पूरी बातें वहाँ उपस्थित छात्र युवा संघर्षवाहिनी के हरिनारायण हर्ष को सुनाई और फिर अपने नैहर पहुँच गयी।

मर्दों ने भी स्वीकारा नेतृत्व

तिलिया के माता-पिता की मौत हो चुकी थी। भाइयों ने उसका स्वागत किया। हालाँकि उसके पति ने कोशिश की थी कि नैहर में भाई का दरवाज़ा भी तिलिया के लिए बंद हो जाए। क्योंकि तिलिया के नैहर में पंचायत के फ़ैसले की सूचना के साथ पति ने संदेश भेजा था कि तिलिया को घर में प्रवेश नहीं दिया जाए। भाई के स्वागत ने तिलिया को बहुत बल प्रदान किया। हालाँकि उसने सोच लिया था, कि यदि भाई उसकी बात नहीं समझेगा तो वह संगठन की शरण में जायेगी। फिर संगठन के सदस्य तिलिया के नैहर पहुँचे लेकिन तिलिया के भैया समझ गए कि उसकी बहन जो भी कर रही है वह ग़लत नहीं है।

इधर बच्चों की देखभाल घर के मर्दों से ठीक से नहीं हो पा रही थी। गाँव में अन्य पिछड़ी जाति के समझदार लोग तिलिया को जानते थे। इन लोगों ने मुसहर लोगों को समझाना शुरू किया। बड़ी जाति की बहू-बेटियाँ नौकरी करती हैं, स्कूल-कॉलेज जाती हैं। पर उन्हें तो तुम

लोग कुछ नहीं कहते। तुम लोगों ने तिलिया के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया।

तिलिया की कमाई का घर में नहीं आना, बच्चों के लालन-पालन में तकलीफ़, दूसरे लोगों द्वारा दिए गए सुझाव और औरतों द्वारा तिलिया के पक्ष लेने आदि ने गाँव में ऐसा वातावरण बनाया कि 20-25 दिनों के बाद ही जेठ का बेटा उसे ससुराल ले आया। ससुराल में पहुँचते ही बच्चे उससे लिपट कर रोने लगे। तिलिया भी अपने आँसुओं को नहीं रोक पायी थी। इसके बाद तिलिया ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कलक्टरी, कचहरी, ब्लॉक में जाकर सबसे मिलने लगी। धीरे-धीरे मर्द भी तिलिया का नेतृत्व स्वीकार करने लगे।

...देखते-देखते बसा दी बस्ती

1999 में गाँव की समिति ने दरभंगा महाराज की ज़मीन पर दलितों को बसाने का निर्णय लिया। 156 बीघे की ज़मीन दरभंगा महाराज ने भू-दान में दी थी। इस ज़मीन को फ़र्जी तरीक़े से दरभंगा महाराज के पटीदार लोकपति सिंह ने बेच डाला था। खैरी गाँव की 156 बीघे ज़मीन पर भी दबंग यादवों को कब्ज़ा दिया जा रहा था। भूदान के पर्चाधारी सत्ता सदाय, बोगेश्वर सदाय बेकब्ज़ा कर दिए गए थे। तिलिया जब पटना स्थित भूदान कार्यालय में आयी तो यहाँ उसे कोई मदद नहीं मिली। तिलिया गाँव लौट गई। गाँव के 40 मुसहरों को संगठित किया और नौ बीघे ज़मीन पर देखते-देखते घर उठा दिया। कमला नदी में बाढ़ आने के कारण मुसहरों की ज़मीन नदी में कट कर बह गयी थी। ज़मीन कटने के बाद ये लोग कमला नदी बाँध पर रह रहे थे। ऐसे में इन्हें स्थायी घर की ज़रूरत थी। जब ये लोग बसने में सफ़ल हो गए तो दबंग लोग इन्हें डराकर भगाने का प्रयास करने लगे। अंत में तिलिया को रिश्वत देने का लोभ देकर ज़मीन पर कब्ज़े का प्रयास किया, लेकिन तिलिया झुकने को तैयार नहीं हुई, तिलिया डटी रही। एक दिन गाँव पर लोकपति सिंह के आदमियों ने आक्रमण कर दिया। कई मुसहर घायल हुए। सोनिया, जगिया, शांति, अमालिय और चलित्तर संघर्ष में सबसे आगे थे। इसीलिए इन्हें निशाना बनाकर गम्भीर रूप से चोट पहुँचायी गयी। इनके जानवर लूट लिये गए। तिलिया फिर भी डटी रही।

तिलिया देवी सहित संगठन के कार्यकर्त्ता दीपक भारती, चन्द्रकिशोर

महतो, हरिनारायण हर्ष, श्रीचन्द्र राय, चागी महतो पर मुक़दमा किया गया। 197, 198, 384, 323, 109 भारतीय दंड विधान की धारा के तहत इन पर उलटे मुक़दमा ठोक दिया गया। दरभंगा महाराज के पक्षधर लोकपति सिंह सामने नहीं आए। क्योंकि उन्होंने भूदान की ज़मीन ग़ैरक़ानूनी रूप से बेची थी। दान में दी गई ज़मीन को बेचने का अधिकार किसी को भी नहीं होता। इस तरह तिलिया ने संघर्ष की बदौलत अपनी एक अलग पहचान बनायी है। अब अपने गीत व नारों में आन्दोलन करने वाले लोग तिलिया का नाम जोड़ने लगे हैं। बिना संस्था की आर्थिक मदद के तिलिया ने पंचायत समिति की सदस्यता प्राप्त की है। लोगों ने उसे वोट व नोट दोनों दिया। तिलिया को 1604 वोट मिले। निकटतम प्रतिद्वन्द्वी को 1400 वोट, यहाँ के निर्वाचित मुखिया को भी तिलिया से 120 वोट कम मिले। चुनाव में तिलिया की बहादुरी को स्वीकार करते हुए लोगों ने वोट दिए। वह लोगों की राय पर उपप्रमुख पद के लिए उम्मीदवार बनी। उनकी प्रस्तावक कमला देवी ने बी.डी.ओ. की सलाह पर अपना समर्थन वापस ले लिया। उसने कहा उसका प्रस्तावक के रूप में किया गया हस्ताक्षर जाली है। इस तरह सत्ता समीकरण में ठीक बैठने वाले असलम मियाँ को बी.डी.ओ. ने उपप्रमुख घोषित कर दिया। वह उपप्रमुख न बन सकी, इसका अफ़सोस उसे नहीं है। पंचायत समिति के सदस्य के रूप में जी-जान से काम कर रही है। तिलिया आज भी संगठन का काम कर रही है। तिलिया पढ़ी-लिखी नहीं है। लिखने-पढ़ने में दूसरे लोगों से मदद लेती है। उसके पति ने आख़िरी बार तिलिया पर अंकुश लगाने में असमर्थ होने पर आत्महत्या करने की कोशिश की। तिलिया ने पति को बचा लिया। पर वह झुकने को तैयार नहीं हुई।

बड़ी होती जा रही है दुनिया...

तिलिया आज भी संघर्ष कर रही है। वह महसूस करती है कि उसके महिला एवं दलित होने के कारण सरकारी अफ़सर उसके काम को महत्त्व नहीं देते। निर्वाचित प्रतिनिधि भी उसकी बात को हँसी में उड़ाने का प्रयास करते हैं। ऐसे अवसर पर प्रतिनिधियों पर दबाव बनाना तिलिया को अच्छी तरह आता है। वह कहती है "सदियों से चली आ रही पुरुष सत्ता इतनी जल्दी टूट नहीं सकती, पर कोई भी काम असंभव नहीं है" वह इस दिशा में अपना प्रयास जारी रखेगी। उसकी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गयी

हैं। पहले केवल संगठन एवं संघर्ष से जुड़े लोग उसके यहाँ आते थे। पर अब वह आम लोग की समस्याओं को भी देखती समझती है। तिलिया कहती है–"मेरी दुनिया धीरे-धीरे बड़ी होती जा रही है। पंचायत व्यवस्था में आर्थिक मानदेय की कोई व्यवस्था नहीं है। बड़े लोग तो अपनी व्यवस्था जहाँ-तहाँ से कर लेते हैं। पर उसे बड़ी कठिनाई होती है। ईमानदार लोगों के भी पेट होते हैं, उनके पेट की व्यवस्था वर्तमान पंचायती राज में नहीं है। अपने समाज महिला एवं हरिजन के जगावे ख़ातिर संघर्षपूर्ण जीवन जीवैक ल शपथ लेने छी और जनता के सेवा करैत छी। दुख में भी सुख के अनुभव करैत छी (हमने अपने समाज एवं दलितों को जगाने का संकल्प लिया है। आर्थिक दिक्कतों के बावजूद सुख का अनुभव करती हूँ।)"